डेरावाल नगर, दिल्ली। 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् प्रभु स्मृति में खड़ें हैं एम.एल.ए सुरेन्द्र पाल, अध्यक्ष अजय, डॉ.मोहित गुप्ता, ब्र.कु.रानी, ब्र.कु.लता तथा अन्य।

नालासोपारा। 'परमात्म अवतरण आध्यात्मिक मेला' का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए महानगरपालिका के उपमहापौर सगीर डांगे, नगरसेवक उमेश नाईक, नरेंद्र जाघव, ब्र.कु.प्रफुल्ला, ब्र.कु.भारती तथा अन्य।

नवी मुम्बई। एम.वी.टी.वी. की डायरेक्टर एवं विधायक मंदाताई म्हात्रे को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं ब्र.कु.शीला, ब्र.कु.शुभांगी।

दौसा। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं जिलाधिकारी रामस्वरूप झाखड़, पूर्व मंत्री रामस्वरूप मीणा, ब्र.कु.जयंति।

जालोर। सम्मान समारोह के अवसर पर रोटरी के अध्यक्ष मोहन पारसर, वैज्ञानिक एन.के.शर्मा, लायंस के कार्यकर्ता लक्ष्मी नारायण अग्रवाल एवं श्याम गोयल को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु.रंजु।

सर्वश्रेष्ठ आकर्षण

संसार में अनेक प्रकार के आकर्षण हैं और हर व्यक्ति किसी न किसी आकर्षण में बंधा हुआ चल रहा है। प्रकृति के एक नियमानुसार एक ही प्रकार की वस्तुएं एक-दूसरे को अपनी ओर खींचती है। जो वस्तु अधिक शक्तिशाली होती है वह दूसरी को अपनी ओर खींचती है। पत्थर का ढेला आसमान की ओर फेंकने पर भी फिर पृथ्वी पर आ गिरता है। नदियों का बहाव सदा सागर की ओर रहता है, आग का शोला सूरज की ओर ही लपकता है ट्यूब में बंद की हुई हवा रास्ता मिलते ही एकदम वायु तत्व में मिल जाती है। घड़े के फूट जाने पर अंदर और बाहर के आकश में कोई अंतर नहीं रहता।

इसी तरह मनोविज्ञान के सिद्धांत के अनुसार एक ही प्रकार के व्यक्ति एक-दूसरे को अपनी ओर खींचते हैं और जो व्यक्ति अधिक शक्तिशाली होता है वह दूसरे को अपनी ओर खींच लेता है। इसी आकर्षण में बंधा हुआ एक-एक प्राणी एक-दूसरे के साथ-साथ या आगे-पीछे चल रहा है और यही आकर्षण संसार-चक्र के अस्तित्व का राज बना हुआ है। यदि संसार की वस्तुओं और व्यक्तियों में आपसी आकर्षण खत्म हो जायें तो संसार का सिलसिला ही छिन्न-भिन्न हो जाये।

अब विचार करने योग्य बात यह है कि मनुष्य के लिए आकर्षण कितने प्रकार के हैं? और 'सर्वश्रेष्ठ आकर्षण' कौनसा है? यदि आकर्षण के एक-एक रूप की सूची तैयार करने लगें तो ऐसा संभव नहीं होगा क्योंकि सृष्टि-चक्र में जितने प्रकार की आत्माएं हैं, उतने ही प्रकार के आकर्षण भी होंगे। एक की पसंद दूसरे से नहीं मिलती। इसीलिए कहा जाता है, ''इन्तखाब अपना-अपना, पसंद अपनी-अपनी''। चुनाचे आकर्षणों के अनेक रूपों को कुछ-एक भागों में ही बांटा जा सकता है और वह भाग हो सकते हैं - प्रकृति का आकर्षण, माया का आकर्षण, इंद्रियों के विषयों का आकर्षण और आत्मा का आकर्षण। इन सब पर हम बारी-बारी से विचार करेंगे।

प्रकृति का आकर्षण:- प्रकृति ने मनुष्य का ध्यान काफी हद अपनी ओर खींचा है। सूरज, चांद, सितारों की जगमगाहट को देखकर मनुष्य उन तक पहुंचने का इच्छुक बना है और इसी आकर्षण के कारण वह चांद तक भी पहुंच गया है। धरती पर बिखरे हुए प्रकृति के अनेक रंगों ने मनुष्य को कहां-कहां की यात्रा करा दी है। कभी वह पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ता है तो कभी सागर की गहराइयों में गोते लगाता है। कभी नदी-नालों, झीलों और झरनों के किनारे घूमता है तो कभी बाग-बगीचों में टहलने लगता है। सर्दी से ठिठुरा हुआ मनुष्य सूरज की तपिश का सहारा लेता है और गर्मी का मारा इंसान पेड़ों की छाया में जा बैठता है। खुले आकाश के आकर्षण ने तो मनुष्य को उड़ना तक सिखला दिया है। कभी-कभी प्रकृति के आकर्षण के पीछे भागते-भागते मनुष्य हांफने भी लगता है परंतु उसकी प्यास नहीं बुझ पाती और वह थोड़ी देर दम लेने के बाद फिर इसी आकर्षण के चक्र में पड़ जाता है। प्रकृति का यह आकर्षण सदाकाल से चला आया है और इसी तरह चलता रहेगा।

माया का आकर्षण:- प्रकृति के आकर्षण में तो मनुष्य कुछ अपनी मर्जी से घूमता है परंतु माया अथवा विकारों के आकर्षण में जाने-अनजाने, चाहते या न चाहते हुए भी भटकता रहता है। कभी-कभी तो इस आकर्षण में वह अपनी सुधबुध भी खो बैठता है। बिलु आमंगल ने इसी आकर्षण में फंसकर सांप को रस्सी समझ लिया था और उसके सहारे वेश्या के चौबारे तक जा पहुंचा था। इसी आकर्षण में फंसकर अच्छे-अच्छे लोगों से अपनी पगड़ियां उछलवाई है। राजाओं-महाराजाओं ने तख्तो-ताज त्याग दिये हैं। इसी आकर्षण का मारा इंसान दिन-रात सिनेमाओं, होटलों और क्लबों की खांक छानता रहता है। कामवासना का यह आकर्षण मनुष्य को उंगलियों पर नचाता है। आज के नर-नारी इसी आकर्षण की गुलामी में शर्मोहय्या को तिलांजलि दिये बैठे हैं और वास्तविक एवं स्थाई आनंद से वंचित रह गये हैं।

कामवासना के आकर्षण के साथ-साथ क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के आकर्षण भी मनुष्य को बार-बार अपनी ओर खींचते रहते हैं। क्रोधी व्यक्ति जहां कहीं क्रोध की तरंगों का अनुभव पाता है वहीं भड़क उठता है। इसी आकर्षण ने अनेक बेगुनाहों की जानें ली हैं। लोभ का मारा व्यक्ति तो दिन-रात निन्यानवे के फेर में रहता है। वह जहां कहीं फायदा देखता है वहीं चिपक जाता है। लोभी व्यक्ति के बारे में ही कहा जाता है कि उसका न कोई धर्म होता है और न कोई ईमान। वह लोभ के आकर्षण में माँ-बाप, भाई-बंधु और बीवी-बच्चों तक को छोड़ देता है।

मोह का आकर्षण तो शमा के आकर्षण की तरह का है। जब कोई व्यक्ति इसमें फंसता है तो धन-दौलत और जायदाद तो क्या जान तक भी कुर्बान कर देता है।

अहंकार के आकर्षण में बंधे हुए व्यक्ति आखिरी दम तक पोजीशन की कुर्सी से चिपके रहते हैं और देश को देश से टकरा कर मानवता के विनाश के निमित्त बन जाते हैं।

यह है सब माया के आकर्षण! जो मनुष्य को सब्जबाग दिखलाकर जिंदगी भर तड़पाते रहते हैं और जिनको मनुष्य भोगता भी रहता है तथा उनसे छूटने का प्रयत्न भी करता रहता है।

इंद्रियों के विषयों का आकर्षण:- प्रकृति, माया और इंद्रियों के विषयों के आकर्षण वास्तव में एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं और आपस में मिल-जुलकर काम करते हैं। इंद्रियों के विषय, गंध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द अपनी-अपनी इंद्रियों नाक, जीभ, आँख, त्वचा और कान को अपनी ओर आकर्षित करते ही रहते हैं। फूलों की भीनी-भीनी खुशबू मनुष्य को मस्त बना देती है। स्वादिष्ट खान-पान को मनुष्य ने जीवन का लक्ष्य ही बना रखा है। सुंदरता के आकर्षण में व्यक्ति के नयन बांवरे बने रहते हैं। नमोनाजुक स्पर्श से इंसान को दिली राहत महसूस होती है और मीठी, सुरीली तानें सुनने को कान सदा ही खुले रहते हैं। इंद्रियों के विषय बहुत आकर्षक हैं। मनुष्य हर समय किसी न किसी आकर्षण का रस लेता ही रहता है।

आत्मा का आकर्षण:- मनुष्य स्वाभाविक रीति से मिल जुलकर रहने का आदी है। हर व्यक्ति किसी न किसी दूसरे व्यक्ति के प्रभाव में चलता है। चाहे वह नाममात्र का प्रभाव ही क्यों न हो! दूसरे शब्दों में हर व्यक्ति किसी न किसी के आकर्षण में बंधा हुआ है। यदि ऐसा न होता तो किसी का किसी से कोई सम्बन्ध न होता और संसार का व्यक्ति अलग-अलग घूमता नजर आता। आत्मा के आकर्षण से ही संसार में अनेक प्रकार के धर्म, मत, पंथ, सभा और सोसाइटियां स्थापित हो पाई हैं। जब कभी किसी आकर्षणमूर्त्त आत्मा का कहीं आगमन होता है तभी सैकड़ों और हजारों बल्कि लाखों की संख्या में लोग उसकी ओर खिंचे चले आते हैं।

अब यदि हम सर्वश्रेष्ठ आकर्षण के बारे में निर्णय करने के लिए ध्यानपूर्वक विचार करें तो इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि आकर्षण वास्तव में विषयों में नहीं है

...शेष पृष्ठ 11 पर